टी0एस इलियट के सिद्धांत

टी0 एस इलियट वीसवीं सदी के प्रख्यात समालोचक और कवि है। उनकी साहित्य संबंधी मान्यताओं ने साहित्य के सैद्धांतिक विमर्श को और अधिक विस्तृत किया है। साहित्य के लिये नोबेल पुस्कार से सम्मानित टी0एस0 इलियट के अनेक विचार उनके द्वारा संपादित 'The Criterian 'पत्रिका में 1992 से 1939 तक प्रकाशित हुये। बाद में उनके आलोचनात्मक लेखों के कई सग्रह सामने आये है। जिनमें से तीन पुस्तके आलोचना के क्षेत्र में बहुत दिनों तक चर्चा का विषय बनी रही है। वे पुस्तके इस प्रकार है –

1. Essays on Poetry and Criticim .
2. The use of Poetry and the use of criticism.
3. The selected Essays.

इन तीनों पुस्तकों में इलियट के आलोचनात्मक विचार स्पष्ट रूप से आये है। इन आलोचनात्मक आलेखों में टी0 एस0 इलियड में प्रमुख तीन सिद्धांतों की चर्चा की हैं। वे सिद्धांत हैं साहित्यिक जगत मे परम्परा का सिद्धांत निर्वेयक्तिकता का सिद्धांत और वस्तुनिष्ठ सह संबंधी अवधारणा के नाम से जाने जाते है। इन सिद्धांतों के माध्यम से टी0 एस0 इलियट ने जिन मौलिक सिद्धांतो को सामने रखा उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है 1. काव्य में आत्माभिव्यक्ति के विचार का विरोध 2. इतिहास एवं परम्परा को अत्यंत महत्वपूर्ण माननां 3. किसी कृति का मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ सह संबंधी अवधारणा के आधार पर होना चाहिये।

दरअसल टी0 एस0 इलियट जिस परिदृश्य में रचनारत थे उस परिदृश्य में आत्माभिव्यक्ति को कला का सम्पूर्ण उद्देश्य मान लिया गया था। इलियट इस प्रकार की प्रवृत्ति के नियामक के रूप में स्वच्छन्तदतावाद को मानते थे। आत्माभिव्यक्ति वैयक्तिंप्रतिभा से जुड़ी हुयी थी अतः इलियट वैयत्तिक प्रतिभा और परम्परा के संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास किया।

Scanned by CamScanner

परम्परा का सिद्धांत

टी0 एस0 इलियट का अत्यंत प्रसिद्ध लेख है Tradition And Indiviual Tallent परम्परा और वैयत्कि प्रतिभा। यह लेख The Selected Essays में संकलित है, इसमें उन्होंने परम्परा पर विस्तार से विचार किया है।

दरअसल इलियट के पूर्व के कवि परम्परा को दरकिनार करते हुये आत्माभिव्यक्ति को ही रचना का मूल उद्देश्य समझते थे। इलियट ने कविता को केवल व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं माना और परम्परा को महत्वपूर्ण माना। परम्परा ऐसी जिसमें अतीत की श्रेष्ठ परम्परायें समाहित है। इलियट ने परम्परा के बारे में लिखा कि ' परम्परा का अर्थ रूढ़ि नहीं और न ही परम्परा का अर्थ काव्य के संदर्भ ,पूववर्ती कवियों को अनुसरण या अंधानुकरण है। परम्परा से तात्पर्य है – पूववर्ती इतिहास का बोध।'

उसने कहा कि परम्परा पूर्णतः अथवा अंशतः कतिपय मतांध अधंविश्वासों को परीक्षण नहीं है। परम्परा का आशय उस अविच्छिन्न धारणा से है जिसमें अतीत वर्तमान एवं भविष्य परस्पर संबंद्ध हैं। यह पुरानी पीढ़ी की काव्य प्रतिमाओं का निष्क्रिय अनुकरण नहीं है। अतीत को अतीत में देखना परम्परा का ऐतिहासिक बोध नहीं वरन् में अतीत विद्यमान रहता है।

इलियट ने कहा कि वैयक्तिक प्रतिभा परम्परा से जुड़कर ही महत्व प्राप्त करती है। परम्परा से असम्बद्ध ,वैयत्तिक प्रतिभा का कोई मूल्य नहीं है। किसी रचना का मूल्यांकन उसके पूर्ववर्ती रचना से भिन्नता या समानात की कसौटी पर होता है। अतः परम्परा का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। रामचरित्र मानस और साकेत की भिन्नता को वही समझ सकता है जिसे अपनी परम्परा का ज्ञान हो। साकेत यदि रामचरित्र मानस का दुहरावभर हेाता तो उसका कोई महत्व नहीं होता। इसी प्रकार रामचरित वाल्मिक के रामायण का दोहराव भर होत तो उसका कोई ऐतिहासिक महत्व नहीं होता। लेकिन यह स्पष्ट है इन रचनाओं में परम्परा एवं युग बोध का अद्भुत सामंजस्य दीखता है। युग बोध अपने समय की जटिलताओं विसंगतियों आदि से उपजी हुयी विचारणा है।

इलियट ने स्पष्ट किया है परम्परा से जुड़ने पर वैयक्ति प्रतिभा का ह्रास नहीं होता बल्कि उसमें वृद्धि होती है। कामायनी की कथा वैदिक युगीन है किन्तु उसकी आधुनिकता अक्षुण्ण है।

Scanned by CamScanner

इलियट यह स्पष्ट मानते है कि परम्परा दान या विरासत में नहीं मिलती बल्कि कलाकार को कठोर परिश्रम करना पड़ता है। परम्परा को ग्रहण करने के लिये कलाकार के पास व्यापक इतिहास बोध होना चाहिये। परम्परा के अध्ययन के विना यां जाने विना कलाकार अपनी दृष्टि विकसित नहीं कर सकता।

" Tradition is a matter of much wider significance . It can not be inherited and if you want it you must botain it by great labour."

स्पष्ट है कि परम्परा बोध हासिल करना पड़ता है जो लोग मनते है कि परम्परा उनके लिये सहज उपलब्ध है वे या तो परम्परा को रूढ़ि समझते है या फिर प्रतिगामी शक्तियों की गिरफ्त में आ जाते है। परम्परा में अच्छी बुरी दोनों चीजे शामिल है। इसलिये अच्छे बुरे की समझ का होना कलाकार के जरूरी है।

इलियट परम्परा को जीवित वस्तु मानते है।जो मृत एवं अनुपयोगी है वह परम्परा नहीं हैं। यह तो एक अविच्छिन्न प्रवाह है जो कि वर्तमान को अतीत के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उत्तमांश से समृद्ध एवं सार्थक बनाती है। इलियट के विचार से परम्परा का संबंध प्रत्येक देश की संस्कृति धर्म दर्शन एवं जीवन दृष्टि से जुड़ा हुआ होता है। यह परम्परा कभी मरती नहीं बल्कि विकासोन्मुख रखती है। इसलिये कोई कवि या कलाकार जितना परम्परा से लगाव रखेगा और समर्पति होगा वह अपने को उतना ही आत्मसम्पन्न बनायेगा और एक समग्र दृष्टि प्राप्त करेगा। साथ ही कलाकार मे ऐसी विश्वदृष्टि विकसित होगी जो उसके युग बोध से जुड़ी होगी। आधुनिक हिन्दी कविता में ' राम की शक्तिपूजा' कविता के वैशिष्ट्य को परम्परा और आधुनिक भाव वोध के माध्यम से समझा जा सकता है।

इलियट किसी कलाकार या कवि की पूर्ण सार्थकता अपने आप में नहीं मानते बल्कि दिवंगत कवियों या कलाकारों के सापेक्ष मूल्यांकन मे मानते हैं। क्योंकि किसी कृति का अकेला मूल्यांकन संभव नहीं है। इस प्रकार वर्तमान अतीत को और अतीत वर्तमान को निर्देशित करता है। परम्परा का अर्थ गतिशीलता है स्थिरता नहीं।

इलियट यह सलाह देते है कि युगों से चली आती काव्य परम्पराओं को कलाकार या रचनाकार के आत्मसात करना आवश्यक है। और यदि उसे आवश्यक लगे कि उसमे कुछ ऐसी स्थितियाँ है जो प्रतिगामी है तो उसमें परिवर्तन करना चाहिये। परम्परा का सम्यक ज्ञान होना और परम्परावादी होना दो अलग–अलग बाते है। कलाकार का काम परम्परा में समाहित प्रगतिशील तत्वों की पहचानकर उनका विकास करना भी है।

आधुनिक हिन्दी कविता में निरालाजी से बेहतर उदाहरण कोई दूसरा नहीं हो सकता। जिसमें परम्परा भंजन एवं परम्परा से लगाव का उत्कृष्ट कलात्मक संतुलन दीखता है।

Scanned by CamScanner